PHILOSOPHY

Hons., Paper - VIII (Part-III)

Dr. S.K. Singh
Mob - 9431449351

प्रभाकर का अख्यातिवाद

→ प्रभाकर वस्तुवाद को दृढ़ता से स्वीकार करते हैं, साथ ही वे स्वतः प्रामाण्यवादी भी हैं। परिणामस्वरूप प्रभाकर तार्किक दृष्टि से भ्रमात्मक ज्ञान या अयथार्थ ज्ञान या मिथ्या ज्ञान या असत्य ज्ञान की संभावना को नकारते हैं। इनके अनुसार ज्ञान अपने आपमें वैध होता है। यद्यपि कि हमारा सारा ज्ञान यथार्थ होता है किन्तु सभी ज्ञान पूर्ण ज्ञान नहीं होता। कहने का आशय यह है कि ज्ञान की दो स्थितियाँ हो सकती हैं — (i) समग्र ज्ञान और (ii) अपूर्ण ज्ञान।

→ इस अपूर्ण ज्ञान को ही भ्रम कहा जाता है जबकि प्रमा समग्र ज्ञान है। प्रभाकर के अनुसार समग्र ज्ञान (प्रमा) और भ्रम ज्ञान (अपूर्ण ज्ञान) का भेद गुणात्मक न होकर मात्रात्मक है। प्रमा से समग्रता का बोध होता है जबकि भ्रम अपूर्ण ज्ञान की स्थिति को इंगित करता है। भ्रम वस्तुतः अपूर्ण ज्ञान है, मिथ्या ज्ञान नहीं है। भ्रम वस्तुतः ज्ञान का अभाव है, विषय को समग्र रूप से न समझ पाने का परिणाम है।

→ भ्रमात्मक ज्ञान में दो बातें निहित ~~रहती~~ होती हैं — (i) इसमें दो संज्ञानों की उपस्थिति होती है जो अपने-अपने विषय को आंशिक रूप से प्रकट करते हैं और (ii) इन दो आंशिक ज्ञानों के बीच भेद नहीं हो पाता है।

→ इन दोनों आंशिक ज्ञानों में से दोनों प्रत्यक्ष हो सकते हैं या दोनों स्मृति हो सकते हैं या इनमें से एक प्रत्यक्ष और दूसरा स्मृति हो सकता है। यहाँ हम तीसरे पक्ष अर्थात् ~~प्रत्यक्ष और~~ प्रत्यक्ष और स्मृति के फलस्वरूप उत्पन्न भ्रम की अवधारणा को एक चार्ट के माध्यम से समझा जा सकता है —

Scanned with CamScanner

जब हम रज्जू को सर्प के रूप में देखते हैं तो यहाँ दो आंशिक ज्ञान का सम्मिलन होता है। जब हम रज्जू के कुछ अंश का प्रत्यक्ष करते हैं और स्मृति में विद्यमान सर्प के गुणों का आरोपण प्रत्यक्ष वस्तु पर कर देते हैं। परिणामस्वरूप भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। स्पष्ट है कि भ्रम समग्र ज्ञान का अभाव है। यह दो आंशिक ज्ञानों का योग है। ऐसा स्मृतिप्रमोष (स्मरण शक्ति के दोष) के कारण होता है। इसे यहाँ 'भेदाग्रह', 'विवेकाग्रह' (विभेद ज्ञान का अभाव) कहा गया है।

→ प्रभाकर के अनुसार गलत ज्ञान की सत्ता तभी मानी जा सकती है जब किसी मिथ्या वस्तु का सत् रूप में ज्ञान हो, परन्तु ऐसा कभी नहीं होता। हम कभी-कभी दो सत् वस्तुओं में भेद ज्ञान के अभाव के कारण इनको एक-दूसरे से संयुक्त कर देते हैं। परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। स्पष्ट है कि प्रभाकर के अनुसार भ्रम अभावात्मक है, अर्थात् यह ज्ञान का अभावमात्र है, भ्रम असत्य ज्ञान नहीं है।

→ वस्तुतः प्रभाकर अपने वस्तुवादी आधार और स्वतःप्रामाण्यवाद में विश्वास के अनुरूप ही अख्यातिवाद का प्रतिपादन करते हैं। यदि प्रत्येक ज्ञान आरंभ से ही प्रामाणिक है तो फिर स्वभावतः यह प्रश्न उभरता है कि 'रस्सी में सर्प का ज्ञान' की व्याख्या कैसे की जाय। अन्य दर्शनों में ऐसे ज्ञान को (अपवाद- रामानुज) गलत ज्ञान के रूप में स्वीकार किया गया है, परन्तु यहाँ प्रभाकर इसे गलत ज्ञान न कहकर अपूर्ण या दो आंशिक ज्ञानों का मिश्रण कहते हैं और इस रूप में वे अपने स्वतःप्रामाण्यवाद की रक्षा करने का प्रयास करते हैं।

Scanned with CamScanner